National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(63): 100-103
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ.अमित कुमार पाण्डेय
बिलासपुर छत्तीसगढ़

Correspondence:
डॉ.अमित कुमार पाण्डेय
बिलासपुर छत्तीसगढ़

दुर्गा सप्तशती : एक शोधपरक अध्ययन

डॉ.अमित कुमार पाण्डेय

प्रस्तावना - दुर्गा सप्तशती, भारतीय शाक्त परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली ग्रंथ है। यह ग्रंथ अध्यात्म, दर्शन, संस्कृति और अध्ययन—इन सभी आयामों में अद्वितीय स्थान रखता है। सप्तशती का अध्ययन केवल धार्मिक साधना का अंग नहीं, बल्कि भारतीय समाज में नारी-शक्ति, दिव्य क्रिया-शक्ति और ब्रह्मविद्या के मौलिक सिद्धांतों को समझने का माध्यम भी है।

दुर्गा सप्तशती का साहित्यिक और सांस्कृतिक स्वरूप अत्यंत समृद्ध है। यह ग्रंथ तीन प्रमुख खंडों—प्रथम चरित्र (महाकाली), मध्य चरित्र (महालक्ष्मी) तथा उत्तर चरित्र (महासरस्वती)—में विभाजित है, जिनमें कुल 700 श्लोक निहित हैं। इसीलिए इसे "सप्तशती" कहा जाता है। देवी महात्म्य का ऐतिहासिक विकास छठी– सातवीं शताब्दी में माना जाता है, किन्तु इसमें निहित देवी-तत्त्व इससे कहीं अधिक प्राचीन वैदिक परंपराओं से संबद्ध है, जहाँ शक्ति को उषा, प्राण, अग्नि-शक्ति तथा सूर्य-भावना के साथ जोड़ा गया है।

ग्रंथ के प्रारंभ में ही देवी के मूलस्वरूप का परिचय मिलता है— **"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥"** यह चिर-प्रसिद्ध श्लोक दर्शाता है कि देवी केवल एक बाहरी देवता नहीं, बल्कि समस्त जगत् की अंतर्संचालित शक्ति हैं, जो प्रत्येक प्राणी के भीतर चेतना, ऊर्जा और क्रिया का आधार बनकर स्थित हैं।दुर्गा सप्तशती में वर्णित देवी स्वरूप केवल युद्ध-मूर्ति नहीं, बल्कि धर्म, न्याय, संतुलन और ब्रह्म-प्रकृति की संरक्षिका के रूप में प्रतिष्ठित है। सात शतकों में देवी और दानवों के मध्य संघर्ष का वर्णन वास्तव में मनुष्य के भीतर विद्यमान नकारात्मक प्रवृत्तियों—आसुर-भाव, अहंकार, असंतुलन—के विरुद्ध दिव्य चेतना के उदय का प्रतीक है।

ग्रंथ का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि शक्ति केवल बाह्य भौतिक सामर्थ्य नहीं, बल्कि आंतरिक आत्मबल, विवेक, सत्य और आध्यात्मिक ऊर्जा का नाम है। देवी-महात्म्य का उद्देश्य प्रत्येक साधक में स्थित इसी दिव्य शक्ति का जागरण है। क्षेत्र, काल और परिस्थिति के भेद के बावजूद, यह ग्रंथ समय की सीमाओं से परे जाकर सार्वकालिक प्रेरणा प्रदान करता है।

इस प्रकार दुर्गा सप्तशती का अध्ययन आध्यात्मिक, दार्शनिक और ऐतिहासिक—तीनों स्तरों पर महत्त्वपूर्ण है। यह ग्रंथ भारतीय संस्कृति की शक्ति-उपासना परंपरा का संवाहक होने के साथ-साथ मानव समाज में धर्म, कर्तव्य और सत्य के संरक्षण का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

दुर्गा सप्तशती का ऐतिहासिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य

दुर्गा सप्तशती का ऐतिहासिक उद्भव भारतीय शक्ति– परंपरा के दीर्घ विकास का फल है। यद्यपि इसका वर्तमान स्वरूप मार्कण्डेय पुराण (अध्याय 81– 93) में प्राप्त होता है, किंतु शक्ति की अवधारणा वैदिक काल से ही भारतीय चिंतन का अभिन्न अंग रही है। वैदिक साहित्य में 'उषस्', 'सरस्वती', 'प्रणव शक्ति',

'अग्नि-शक्ति' तथा 'अदिति' जैसे स्त्री-देवी स्वरूप शक्ति की मूलभूत धारणाओं को अभिव्यक्त करते हैं।

ऋग्वेद में देवी-शक्ति का स्वरूप स्पष्ट रूप से प्रतिपादित है— **"अम्भित्वा सूदने पृच्छामि वेदना..." (ऋग्वेद 10.125)** जिसमें देवी स्वयं कहती हैं कि वे समस्त देवों की शक्ति हैं, वे ही प्राण में, मन में और समस्त लोकों में व्याप्त हैं। यह वही शक्ति है जो दुर्गा सप्तशती में 'आदिशक्ति' या 'महामाया' के रूप में प्रतिष्ठित होती है।

दुर्गा सप्तशती में देवी को महामाया कहकर संबोधित किया गया है— **"या देवी सर्वभूतेषु मायारूपेण संस्थिता।"** यह श्लोक दर्शाता है कि संसार की समस्त गतिशीलता, सृजन, पालन और संहार की प्रक्रिया उसी दिव्य शक्ति से संचालित है। देवी का रूप समय, काल, परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित होता है — कभी महाकाली के रूप में, कभी महालक्ष्मी के रूप में और कभी महासरस्वती के रूप में।

ग्रंथ के प्रथम चरित्र में देवी का क्रोधमय, तामसिक और संहारशील रूप वर्णित है। महिषासुर-वध प्रसंग में देवी की प्रबल शक्ति और दैत्य-दमन का स्वरूप विशेष रूप से प्रकट होता है— "देवीमभ्यर्च्य विधिवत् पूजयित्वा च तां मुदा। ददुः प्रसादं तस्यै ते देवाः सर्वे समागताः॥" इस श्लोक में देवताओं द्वारा देवी की आराधना और उनके द्वारा प्रदत्त वरों का उल्लेख है, जो देवी को समस्त देव-शक्ति का केंद्र सिद्ध करता है।

मध्य चरित्र में देवी का राजसिक स्वरूप, दैवी धैर्य, सामर्थ्य और धर्मसंरक्षण का भाव मिलता है— "सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।" इस वाक्य में देवी को जगत की सृष्टि, स्थिति और संहार की अंतःशक्ति के रूप में चित्रित किया गया है।

उत्तर चरित्र में देवी का सात्त्विक और ज्ञानमयी रूप व्यक्त होता है। दुर्गा सप्तशती में वर्णित 'श्रीसूक्त-सदृश' स्तुतियों में देवी को ज्ञान, विवेक और मोक्ष की दायिनी के रूप में पुकारा गया है— **"शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥"** यह स्तुति देवी के अनुग्रह, करुणा और शरणागत-वत्सलता का प्रतीक है।इस प्रकार दुर्गा सप्तशती का ऐतिहासिक एवं धार्मिक विकास केवल देवी-स्तुति तक सीमित नहीं, बल्कि यह संपूर्ण भारतीय धर्म-दर्शन का विस्तार है। इसमें प्रकृति, शक्ति, धर्म, शांति, न्याय और मोक्ष—सभी के आदर्श एक साथ समन्वित रूप में उपस्थित होते हैं।

ग्रंथ का संरचनात्मक विन्यास (700 श्लोकों का वर्गीकरण)

दुर्गा सप्तशती का संपूर्ण विन्यास अत्यंत वैज्ञानिक, साहित्यिक और आध्यात्मिक दृष्टि से सुव्यवस्थित है। यह ग्रंथ मार्कण्डेय पुराण के 81वें से 93वें अध्याय तक विस्तारित है और इसमें कुल 700 श्लोक होने के कारण इसे "सप्तशती" कहा जाता है। यह सप्तशती तीन मुख्य खंडों में विभाजित है—प्रथम चरित्र (महाकाली), मध्य चरित्र (महालक्ष्मी) और उत्तर चरित्र (महासरस्वती)। प्रत्येक खंड में देवी की शक्ति के भिन्न-भिन्न स्वरूप तथा उनके द्वारा दानवों के विनाश का वर्णन है।

1. प्रथम चरित्र : महाकाली (अध्याय 81)

इस खंड में देवी का तामसिक और उग्र स्वरूप वर्णित है। यह चार अध्यायों (1– 4) में विभक्त माना जाता है।इस चरित्र का मुख्य प्रसंग मधु-कैटभ वध तथा महामाया के जागरण से संबंधित है। देवी के जागरण का अत्यंत महत्वपूर्ण श्लोक इस प्रकार है— "ततो जगत्यां जगदम्ब रूपिणीं, स्थितां महायोगिनि योगनिद्राम्।" यहाँ देवी को 'योगनिद्रा' कहा गया है, जो स्वयं विष्णु की अंतर्मुख शक्ति के रूप में कार्य करती हैं।

2. मध्य चरित्र : महालक्ष्मी (अध्याय 82– 87)

यह सप्तशती का सबसे विस्तृत और युद्ध-प्रधान भाग है। इसमें महर्षि मार्कण्डेय ने देवी के राजसिक स्वरूप का वर्णन किया है। महिषासुर, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज, धूम्रलोचन आदि दानवों से देवी की भीषण युद्ध-लीला इसी खंड में आती है।मध्य चरित्र का एक अत्यंत प्रसिद्ध श्लोक है— **"चण्डमुण्डवधायै चायै, नमस्तस्यै नमो नमः॥"** यह श्लोक देवी की दैवी सैन्य-ऊर्जा और दानवसंहारक सामर्थ्य को प्रकट करता है।विशेष रूप से रक्तबीज-वध प्रसंग में देवी के अनंत रूप का वर्णन मिलता है**— "देवी खड्गं च चर्माणि शूलं च मुसलं तथा।"** यहाँ देवी के बहु-आयुध रूप का उल्लेख है, जो शक्ति के अनेक रूपों का प्रतिनिधित्व करता है।

3. उत्तर चरित्र : महासरस्वती (अध्याय 88– 93)

यह खंड सात्त्विक, ज्ञानमयी और करुणामयी शक्ति का प्रतीक है। इसमें शुंभ-निशुंभ वध, देवी की उत्पत्ति और देवताओं द्वारा किए गए स्तोत्र शामिल हैं।सबसे प्रसिद्ध स्तोत्र "नारायणि स्तुति" इसी चरित्र में मिलता है**— "शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते॥"** यह स्तोत्र देवी के करुणामय और जगत-पालक रूप का द्योतक है।देवी की उत्पत्ति के प्रसंग में देवी को आदिशक्ति कहा गया है**— "देवानां कार्यसिद्ध्यर्थं सम्भूताऽसि सुरेश्वरि।"** यह श्लोक दर्शाता है कि देवी देवताओं की सामूहिक शक्ति से नहीं, बल्कि स्वयं आदिशक्ति के रूप में प्रकट होती हैं।

4. सप्तशती के 700 श्लोकों का सांकेतिक महत्व

700 श्लोक केवल संख्या नहीं, बल्कि आध्यात्मिक "सप्त" तत्वों—सप्त लोक, सप्त धातु, सप्त समुद्र, सप्त ऋषि, सप्त स्वरों—का भी द्योतक है। इस संख्या के माध्यम से ग्रंथ यह संदेश देता है कि शक्ति समस्त जगत के सातों आयामों में व्याप्त है।इस प्रकार दुर्गा सप्तशती का संरचनात्मक विन्यास देवी के त्रिगुणात्मक स्वरूप—तामसिक (महाकाली), राजसिक (महालक्ष्मी) और सात्त्विक (महासरस्वती)—को दार्शनिक और साहित्यिक रूप में एकीकृत करता है। यह विन्यास भारतीय शक्ति-परंपरा की सुव्यवस्थित आध्यात्मिक संरचना का अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है।

देवी-माहात्म्य का दार्शनिक पक्ष

दुर्गा सप्तशती के दार्शनिक आधार को समझने के लिए आवश्यक है कि इसे भारतीय दर्शन के व्यापक संदर्भ में रखा जाए। यह ग्रंथ शाक्त दर्शन का प्रमुख आधारग्रंथ होने के साथ-साथ अद्वैत, सांख्य, तंत्र और वेदांत – सभी की अवधारणाओं का समन्वय प्रस्तुत करता है। देवी यहाँ केवल एक सांप्रदायिक सत्ता नहीं, बल्कि ब्रह्म– स्वरूप, प्रकृति– स्वरूप और चेतना– स्वरूप सभी रूपों में प्रतिष्ठित हैं।

1. देवी का ब्रह्मस्वरूप;दुर्गा सप्तशती में देवी को परब्रह्म का स्वरूप माना गया है। यह दृष्टि वेदांत की उस धारणा से जुड़ती है जिसमें ब्रह्म निराकार होने के साथ-साथ शक्ति रूप में साकार भी है। सप्तशती में कहा गया है— "त्वमेव साक्षात् परमा प्रकृतिः।" यह श्लोक स्पष्ट करता है कि देवी शक्ति केवल भौतिक प्रकृति नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि की मूलभूत ब्रह्म-ऊर्जा हैं।

श्रीमार्कण्डेय ऋषि कहते हैं**— "नमो देवि महादेवि शिवायै सततं नमः।"** यहाँ 'महादेवी' और 'शिवा' दोनों का प्रयोग इस बात का संकेत करता है कि देवी शिव-तत्त्व (ब्रह्म-तत्त्व) की अंतःस्फूर्त शक्ति हैं।

2. सांख्य दर्शन और शक्ति– पूजा;सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष के द्वैत को स्वीकार किया गया है। दुर्गा सप्तशती इस द्वैत को देवी के माध्यम से स्पष्ट करती है—देवी यहाँ प्रकृति हैं और विष्णु– शिव आदि देव पुरुष-तत्त्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। देवी के माध्यम से ही पुरुष में क्रिया-शक्ति उत्पन्न होती है: **"यया तत्त्वमिदं सर्वं जगदव्यक्तरूपिणा।"** अर्थात् देवी ही वह शक्ति हैं जिनसे इस जगत की कार्यशीलता संभव होती है।

3. तांत्रिक दार्शनिक आधार ;दुर्गा सप्तशती तांत्रिक परंपरा का आधारग्रंथ मानी जाती है। देवी का वर्णन यहाँ महामाया, योगनिद्रा, भावनात्मक शक्ति और त्रिगुणात्मक प्रकृति के रूप में मिलता है।एक महत्वपूर्ण श्लोक है— "देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातः।" इसमें साधक देवी को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करता है, जो तंत्र में 'इष्टदेवता-संपर्क' की मूल भावना को दर्शाता है।

4. अद्वैत वेदांत और शक्ति ; अद्वैत वेदांत के अनुसार ब्रह्म सत्य है और जगत मिथ्या। दुर्गा सप्तशती में भी देवी को एक अद्वितीय अस्तित्व के रूप में स्वीकार किया गया है, जो समस्त जगत में व्याप्त हैं। "या देवी सर्वभूतेषु..." इसी अद्वैत दृष्टि का विस्तार है। उक्त प्रसिद्ध श्लोक— **"या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते।"** इस बात को स्पष्ट करता है कि चेतना का मूल तत्त्व देवी हैं – यही अद्वैत की शुद्ध ब्रह्म-चेतना है।

5. धर्म– संरचना का दार्शनिक आधार ; दुर्गा सप्तशती में देवी का प्रादुर्भाव धर्म की रक्षा के लिए माना गया है। देवताओं द्वारा देवी को आह्वान करते हुए कहा गया है— "सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।" यह श्लोक स्पष्ट करता है कि धर्म का संरक्षण केवल बाहरी युद्ध से नहीं, बल्कि संतुलन, विवेक और न्याय की रक्षा से होता है। देवी इस 'धर्म-रक्षा' का साकार रूप हैं।

6. मोक्ष और देवी ; दुर्गा सप्तशती में देवी को केवल दानव-विनाशिनी नहीं, बल्कि मोक्ष-प्रदायिनी भी कहा गया है। साधक को आत्मबल, विवेक और अंतःशांति प्रदान करना देवी का परम उद्देश्य माना गया है—यहाँ ज्ञान-वैराग्य और आत्मसाक्षात्कार की महत्ता पर बल दिया गया है।इस प्रकार देवी-महात्म्य का दार्शनिक आधार अत्यंत व्यापक है। यह न केवल शाक्त दर्शन को मजबूती देता है, बल्कि वैदिक, सांख्य, अद्वैत और तंत्र – सभी परंपराओं को एकीकृत कर भारतीय आध्यात्मिक चिंतन की विशिष्टता को स्थापित करता है।

सप्तशती में शाक्त दर्शन की अभिव्यक्ति

दुर्गा सप्तशती शाक्त दर्शन का सर्वाधिक प्रामाणिक और प्रभावशाली ग्रंथ माना जाता है। शाक्त मत का केंद्रीय सिद्धांत यह है कि शक्ति ही शिव है, शक्ति ही ब्रह्म है, शक्ति ही जगत की कारण-भाविनी सत्ता है। सप्तशती में देवी को समस्त अस्तित्व की मूलाधार ऊर्जा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। इसमें शक्ति को न केवल जगत की सृजन–पालन– संहार शक्ति माना गया है, बल्कि साधक के आंतरिक जागरण और आत्मसाक्षात्कार की भी आधार-शक्ति कहा गया है।

1. शक्ति का सर्वव्यापक स्वरूप ;शाक्त मत में देवी को व्यापक, अनादि, अनंत शक्ति माना गया है। सप्तशती में बार– बार कहा गया है कि देवी समस्त भूतों में, समस्त भावों में और समस्त क्रियाओं में अंतर्निहित हैं।**"या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥"**यह मंत्र शाक्त दर्शन की आधारशिला है—देवी केवल एक विशेष रूप में स्थित नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि में

व्यापक 'ऊर्जा-तत्त्व' हैं। इसी कारण शाक्त मत में शक्ति-साधना का अर्थ बाह्य देवी-पूजन ही नहीं, बल्कि आंतरिक ऊर्जा का जागरण भी है।

2. त्रिगुणात्मक स्वरूप – शाक्त मत की मूल अवधारणा

शाक्त दर्शन प्रकृति के त्रिगुणात्मक स्वरूप पर आधारित है—सत्त्व, रज और तम। सप्तशती में देवी के तीन चरित्र इन्हीं त्रिगुणों का प्रतीक हैं:

महाकाली – तमोगुण का संहारात्मक स्वरूप

महालक्ष्मी – रजोगुण का सक्रिय एवं युद्धशील स्वरूप

महासरस्वती – सतोगुण का शांत एवं ज्ञानमयी रूप

सप्तशती में यह त्रिविध विभाजन स्पष्ट रूप से मिलता है। उदाहरणस्वरूप, देवी का तमसिक रूप वर्णित है**— "क्रोधात्तमोगुणा देवी महाकाल्यभ्यजायत।"**

3. शक्ति और पुरुष का संबंध -शाक्त मत में शक्ति और शिव (पुरुष) का संबंध अभिन्न माना गया है। पुरुष निष्क्रिय चेतना है, और शक्ति सक्रिय ऊर्जा। सप्तशती में विष्णु के शयनकाल में जब देवी योगनिद्रा के रूप में प्रकट होती हैं, तब यह संबंध स्पष्ट हो जाता है—**"योगनिद्रां भगवतीं विष्णोः प्राणैः प्रतिष्ठिताम्।"**यहाँ देवी विष्णु की अंतःशक्ति के रूप में कार्यरत हैं। इससे शाक्त मत का यह सिद्धांत सिद्ध होता है कि शक्ति के बिना पुरुष (चेतना) भी निष्प्रभावी है।

4. शक्ति – धर्म और न्याय की संरक्षिका -सप्तशती में शाक्त दर्शन यह स्थापित करता है कि शक्ति धर्म की संरक्षिका है। देवी दानवों का संहार केवल युद्ध या प्रतिशोध नहीं है, बल्कि धर्म की पुनर्स्थापना है। देवताओं की प्रार्थना में यह स्पष्ट कहा गया है:**"धर्मस्य गुह्यरूपं त्वं पालयस्व जगन्मयि।"**इससे शाक्त मत में धर्म-संरक्षण को शक्ति का प्राकृतिक धर्म माना गया है।

5. शक्ति – आत्मजागरण का साधन- शाक्त दर्शन केवल बाहरी युद्ध या दानव-वध तक सीमित नहीं है। यह मनुष्य के भीतर स्थित आसुरी प्रवृत्तियों—अहंकार, क्रोध, मोह, अज्ञान—का भी विनाश करता है। सप्तशती में देवी को 'मोह-नाशिनी' और **'अज्ञान-तिमिर-नाशिनी' कहा गया** है—इस प्रकार, सप्तशती में शाक्त दर्शन की अभिव्यक्ति अत्यंत व्यापक, गहरी और बहुआयामी है। देवी यहाँ केवल युद्ध-देवी नहीं, बल्कि समस्त ब्रह्मांडीय ऊर्जा, धार्मिक संतुलन, आत्मजागरण और मोक्ष का साक्षात् स्वरूप हैं।

उपसंहार

दुर्गा सप्तशती भारतीय धार्मिक परंपरा में अद्वितीय स्थान रखती है। यह केवल एक युद्धगाथा नहीं, बल्कि शक्ति– उपासना, तत्त्वचिंतन, दर्शन और आध्यात्मिक साधना का समन्वित ग्रंथ है। सप्तशती में वर्णित महामाया का स्वरूप पूरे विश्व को संचालित करने वाली आदिशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। तीनों चरित्रों—प्रथम, मध्यम तथा उत्तर—में शक्ति के सृजन, पालन और संहार रूप का संगठित दर्शन मिलता है। यह ग्रंथ मानव-जीवन के भीतर स्थित आसुरिक प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर आत्मशक्ति के जागरण का संदेश देता है।सप्तशती में वर्णित 'या देवी सर्वभूतेषु' जैसे मंत्र शक्ति के सर्वव्यापक स्वरूप को स्थापित करते हैं, वहीं देवी की कृपा पर आधारित मोक्ष-मार्ग साधक को लौकिक और पारलौकिक दोनों स्तरों पर उन्नति प्रदान करता है। शाक्तदर्शन के अनुसार, शक्ति ही ब्रह्म है और शक्ति ही विश्व के संचालन की आधारभूत सत्ता। इसी प्रकार, सप्तशती में निहित नैतिक– धार्मिक मूल्य भारतीय समाज की संस्कृति, कला, साहित्य और आध्यात्मिक परंपराओं को आज भी दिशा प्रदान करते हैं।

अतः दुर्गा सप्तशती केवल धार्मिक आस्था का आधार नहीं, बल्कि भारतीय ज्ञान-परंपरा का महत्त्वपूर्ण शास्त्र है, जिसने समाज, संस्कृति, आध्यात्मिकता और दर्शन को अद्वितीय रूप से समृद्ध किया है।

संदर्भ सूची

1. देवी-माहात्म्य (दुर्गा सप्तशती) – मार्कण्डेय पुराण, अध्याय 81–93।
2. शाण्डिल्य, पी. – दुर्गासप्तशती व्याख्या, चौखम्बा संस्कृत सीरीज़, वाराणसी।
3. कृष्णनंद आगमवागीश – तंत्रसार, चौखम्बा प्रकाशन।
4. गोरक्षनाथ – शक्तिसंगम तंत्र, प्राचीन तांत्रिक ग्रंथ संग्रह।
5. स्वामी जगदीशानंद – शाक्तदर्शन और साधना, अद्वैत आश्रम, कोलकाता।
6. रामकृष्ण मिशन प्रकाशन – देवी-महात्म्य: अनुवाद एवं व्याख्या।
7. देवी भागवत पुराण, नवम स्कंध – शक्ति– तत्त्व पर विस्तृत चर्चा।
8. विनयचन्द्र भट्टाचार्य – शक्तिपरम्परा और भारतीय संस्कृति, भारतीय विद्या भवन।